केवल पढ़ने के लिए

उपकार का बदला

• मेलजोल एवं सद्भाव •

उस वर्ष बहुत वर्षा हुई। पूरा केरल राज्य बाढ़ की चपेट में था। हशमत मियाँ की झोंपड़ी बह गई थी। वे अपनी पत्नी के साथ पेड़ की एक मोटी डाल पर चिपके हुए थे। चारों तरफ़ पानी ही पानी था।

तभी दूर से काला-काला कुछ बहता हुआ पेड़ के नीचे आकर रुक गया। पेड़ हिला। कोई और भी पेड़ के मोटे तने से चिपक रहा था। हशमत ने देखा, वह एक छोटा हाथी था। बिलकुल बच्चा।

दो दिन तक पानी नीचे न उतरा। हशमत और सलीमा पेड़ के पत्ते चबाकर अपनी भूख मिटाते रहे। हशमत पेड़ की नरम पत्तियाँ और कोमल डालियाँ तोड़कर हाथी के बच्चे की ओर फेंकता। छोटा हाथी उन्हें सूँड़ में पकड़ गटक लेता और कृतज्ञ भाव से हशमत की ओर देखता।

धीरे-धीरे बाढ़ का पानी कम होता गया। हशमत और सलीमा पेड़ के नीचे उतरे। हाथ-पाँव सीधे किए और एक जगह ऊँची, सूखी ज़मीन देख रुक गए। हाथी का बच्चा भी साथ-साथ ही था। हशमत ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा और बोला, "कल्लू मियाँ, अब अपने घर जाओ।"

कल्लू मियाँ ने तो हशमत के साथ रहने का निश्चय कर ही लिया था।

हशमत ने झोंपड़ी बनाई। कल्लू ने बहुत मदद की। इधर-उधर से भारी-भारी लकड़ियाँ ले आता। सूँड़ से मिट्टी की दीवार सीधी कर देता। धीरे-धीरे हशमत और सलीमा की गृहस्थी जमने लगी। गाँव के अन्य लोग ऊँची धरती देख उस पर अपने घर बनाने लगे। अच्छा-खासा गाँव बस गया। खेती-बाड़ी होने लगी।

कुछ वर्ष बीत गए। कल्लू बड़ा हो गया। उधर हशमत के भी बच्चे हो गए। वह इधर-उधर कुछ काम करके सबका पेट भरता। हाथी ज़ंजीर से बँधा रहता। गाँव के बच्चे कल्लू से खेलते। उसके लिए गुड़, चावल, केले आदि ले आते। सलीमा वह सब अपने बच्चों के लिए रख लेती और कल्लू के आगे रूखा-सूखा कुछ डाल देती।

कल्लू हशमत से बहुत प्यार करता था। वह भूखा रहने पर भी हशमत का साथ नहीं छोड़ना चाहता था। हशमत कभी-कभी जंगल से लकड़ियाँ लाने जाता तो कल्लू को साथ ले जाता। उस दिन कल्लू की पिकनिक हो जाती। वह जी भरकर ताल-तलैयों में नहाता और जंगली फल-पत्ते खाता।

एक बार हशमत बीमार पड़ गया। कई दिन तक बुखार नहीं उतरा। सलीमा दो-चार दिन कल्लू को कुछ रूखा-सूखा देती रही पर उससे उसका पेट नहीं भरता था। सलीमा अपने बच्चों को खाना देती तो वह उसे गुस्से से देखता। कल्लू ज़ोर-ज़ोर से चिंघाड़ता।

एक दिन सलीमा ने उसकी ज़ंजीर खोल दी। बोली, "भाग यहाँ से! अपने खाने को तो है नहीं, तुझे कहाँ से खिलाऊँ?"

कल्लू छूटकर सीधा हशमत की चारपाई के पास जा पहुँचा। हशमत सब समझ गया। वह गिरता-पड़ता उसके साथ चल पड़ा। कल्लू ने उसे अपनी सूँड़ से उठाया और मस्तक पर बैठा लिया। वह तेज़ी से एक ओर बढ़ चला।

आगे एक गाँव पड़ा। वहाँ मेला लगा था। बच्चे हाथी देख तालियाँ बजाने लगे। किसी ने हाथी के लिए केलों का एक गुच्छा दिया, तो किसी ने कुछ अन्य सामान।

एक बालक अपने पिता से ज़िद करने लगा, "मैं हाथी की सवारी करूँगा।"

हशमत बोल उठा, "हाँ-हाँ, अवश्य। उसने बच्चे को उठाकर हाथी पर बैठा दिया। दो-चार बच्चे और भी तैयार हो गए। हशमत ने कुछ सोचा और कहा, "एक-एक रुपए में सबको हाथी पर बैठाकर सवारी करवाऊँगा।"

दिनभर यही चलता रहा। उस दिन हशमत और कल्लू ने खूब बढ़िया-बढ़िया खाना खाया। शाम होने को थी। हशमत ने घर जाने की तैयारी की। बची हुई भोजन-सामग्री भी काफ़ी थी। जेब में लगभग पचास रुपए भी थे।

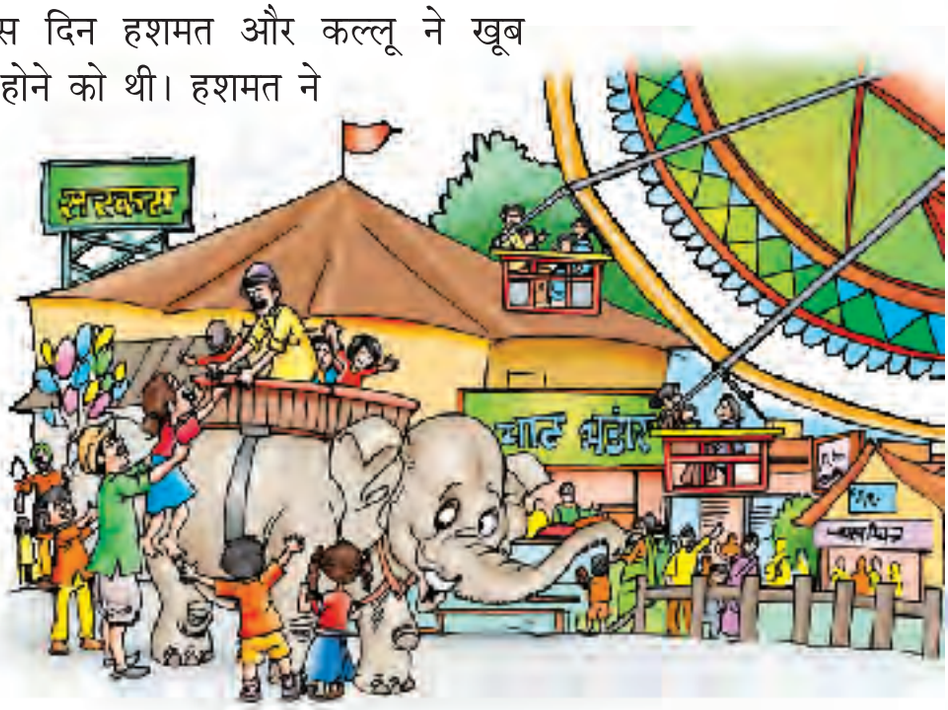

हशमत घर पहुँचा। बच्चे भूख से बेहाल थे। सलीमा परेशान थी। तभी भोजन की सुगंध सबकी नाक तक पहुँची। सभी प्रसन्न हो भोजन खाने लगे। हशमत ने सलीमा से कहा, "पचास रुपए भी लाया हूँ, कुछ दिन तो निकल ही जाएँगे। और जानती हो यह सब अपने कल्लू मियाँ के कारण ही मिला है।"

सलीमा ने प्यार से कल्लू को सहलाया और हाथ की मिठाई उसकी ओर बढ़ा दी।

विशेष : **पाठ में प्रयुक्त रंगीन शब्द मानक वर्तनी के नवीन रूप हैं।**